Date: / / (1)

S. S. College, Jehanabad
Class - B.A Part II (Hons.)
Subject - Psychology Paper - IV
(Systems of Psychology)
Teacher's Name - Dr. Viveka Nand Sharma
e-content for three days | Date - 10.06.2021
11.06.2021
12.06.2021

Topic — Psychoanalysis

Contribution of Sigmund Freud (1856-1939)

मनोविज्ञान के मनोविश्लेषणात्मक सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय Sigmund Freud (1856-1939) को है जिन्होंने एक ऐसे सम्प्रदाय की स्थापना की जो मनोविज्ञान के अन्य सम्प्रदायों से बिल्कुल अलग था। इन्होंने अपने मनोविश्लेषणवाद की स्थापना 1895 ई० में किया। इन्होंने ~~मनोविज्ञान~~ मनोविश्लेषण के तीन अर्थ बतलाये -

(i) मनोविश्लेषण मानसिक रूप से बीमार व्यक्तियों के उपचार की एक विधि है।

(ii) मनोविश्लेषण व्यक्तित्व का एक सिद्धान्त है।

(iii) मनोविश्लेषण मनोविज्ञान का एक सम्प्रदाय (School) है।

Freud ने मनोविश्लेषण शब्द का प्रयोग एक सम्प्रदाय (School) के रूप में किया। मनोविश्लेषण सम्प्रदाय की औपचारिक स्थापना 1895 ई० मानी जाती है जब इन्होंने Joseph Breuer के साथ मिलकर 'Studies in Hysteria' नामक शोध-पत्र प्रकाशित की। 1885 ई० में Freud को वियाना विश्वविद्यालय से पेरिस जाकर Charcot के साथ [illegible] करने के लिए अनुदान मिला। वहाँ पर [illegible] Charcot [illegible] Freud ने [illegible] बीमार [illegible] सम्मोहन से

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Hysteria के रोगी का किस प्रकार उपचार किया जा सकता। Freud ने यह भी पाया कि Hysteria का मौलिक कारण ~~कोई~~ मनोवैज्ञानिक होता है। Freud लगभग चार महीने तक Charcot के निर्देशन में रहने के बाद वियना लौट गये जहाँ पर इन्होंने Breuer के साथ मिलकर Hysteria के रोगियों का इलाज प्रारम्भ किया। इन्होंने यह स्पष्ट बतलाया कि Hysteria महिलाओं के साथ-साथ पुरुषों को भी होता है। इसके बाद Freud ने सम्मोहन विधि के स्थान पर स्वतंत्र-साहचर्य विधि (Method of Free Association) का प्रतिपादन किया और इन्होंने इस विधि के द्वारा ही रोगियों का इलाज प्रारम्भ कर दिया। Freud के लिए 1900 ई० का साल काफी महत्त्वपूर्ण रहा जब इन्होंने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'Interpretations of Dreams' का प्रकाशन किया। इस पुस्तक में इन्होंने विभिन्न प्रकार के स्वप्नों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। इसी पुस्तक के कारण Freud का Adler, Jung, Otto Rank, Frenzi इत्यादि मनोवैज्ञानिकों से सम्पर्क स्थापित हुआ। लेकिन बाद में सभी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर Freud से मतभेद हो जाने के कारण इनसे अलग हो गए। एक मनोवैज्ञानिक के रूप में Freud का मनोविज्ञान के क्षेत्र में काफी योगदान रहा है और इन योगदानों में एक क्रमबद्धता देखने को मिलती है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में किये गए विभिन्न योगदानों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है :-

(1) अचेतन (Unconscious) :-

Freud ने मन के मुख्य तीन स्तर बतलाये हैं - चेतन, अर्धचेतन तथा अचेतन। इन्होंने चेतन के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि इसमें वे सभी मानसिक बातें होती हैं जिनसे व्यक्ति ठीक ...

समाज में अव्यक्त होता है। इन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा कि मानसिक जिन्दगी का एक छोटा सा भाग ही चेतन होता है। इन्होंने पूर्वचेतन (Preconscious) या अर्धचेतन (Subconscious) को स्पष्ट करते हुए कहा कि पूर्वचेतन की संरचना ऐसे मानसिक तत्वों से होती है जो चेतन में तो नहीं होता है लेकिन थोड़ा सा प्रयास करने पर उन्हें वापस चेतन में आसानी से लाया जा सकता है। Freud ने यह बताया है कि अचेतन मन का सबसे बड़ा भाग होता है। अचेतन में वैसे ही मानसिक तत्व होते हैं जो चेतन में नहीं आ पाते हैं या बहुत कोशिशों से आ पाते हैं। इसमें कामोत्तेजना की इच्छायें तथा मानसिक संघर्ष इत्यादि से सम्बन्धित इच्छायें होती हैं जिसे सामान्यतः व्यक्ति दैनिक जीवन में नहीं लाता है। इनका कहना है कि अचेतन की इच्छाओं का सहज मार्ग व्यवहार पर देखा जाता है।

(2) उपाहम, अहम एवं पराहम (Id, Ego and Superego): — Freud ने मन के गत्यात्मक संरचनात्मक पहलुओं के आधार पर करते हुए इसे तीन भागों में विभाजित किया है जिसे Id, Ego तथा Super ego कहते हैं। Id व्यक्तित्व का जैविक तत्व होता है। इसकी संरचना ऐसे मानसिक तत्वों से होती है जो जन्मजात होता है तथा व्यक्ति की शारीरिक संरचना से सम्बन्धित होते हैं। Id में ऐसे इच्छाएँ एवं आवेग होते हैं जो किसी भी नियम एवं कानून को मानने वाला नहीं होता है और बिना परिणाम की चिन्ता किये हुए अपने इच्छाओं को की पूरा पूर्ति करना चाहता है। यह आनन्द के नियम (Pleasure Principle) से संचालित होता है। जन्म के [illegible] होता है। लेकिन जैसे बड़ा होता है तो [illegible] से ही Ego का विकास होता है।

Ego ਮਨ ਦਾ ਵਹ ਭਾਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਸਦਾ ਪ੍ਰਤੱਖ ਸੰਬੰਧ ਚੇਤਨਾ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਇਸਲਈ ਇਹ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਦੇ ਨਿਯਮ ਤੋਂ ਸੰਚਾਲਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। Ego ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਇੱਛਾਵਾਂ ਨੂੰ ਅਨੁਸਾਰ ਸਮਾਜਿਕ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਦੇ ਧਿਆਨ ਚ ਰਖਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਹ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਦਾ ਮੂਲ ਉਦੇਸ਼ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਅਖੰਡਤਾ (Integrity) ਕਾਇਮ ਰੱਖਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਮੂਲ ਰੂਪ ਚ ਦੋ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾ ਤਾਂ ਇਹ ਇੱਛਾ ਮਨੋਵਾਸਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਕਰਦੀ ਜੋ ਆਂਵਦੀਆਂ ਨੂੰ ਜੀਵਨ ਦੀ ਤਾਕਤ ਤੋਂ ਰੋਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੂਜਾ ਇਹ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਉਪਰਲੀ ਗੱਲ ਤੋਂ ਇਹ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ Id ਤਥਾ ਕਾਰਜ ਉਤੇਜਿਤ ਬੀਚ ਕੇਵਲ ਸਮਝੌਤਾ ਕਰਾਉਣ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ। Super ego ਮਨ ਦਾ ਨੈਤਿਕ ਅੰਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਤੋਂ ਸੰਚਾਲਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। Ego ਦੇ ਸਮਾਨ ਇਹ ਕੋਈ ਅਚੇਤਨ ਤੱਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਜਿਆਦਾ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਨਿਯਮਾਂ ਤੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। Ego ਦੇ ਸਮਾਨ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਤੋਂ ਸੰਚਾਲਿਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਇਸਲਈ ਇਹ ਹਰ ਕੰਮ ਨੂੰ ਪੂਰਨਤਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ ਭਾਵੇਂ ਕਿ ਪੂਰਨਤਾ: ਅਵਾਸਤਵਿਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ Freud ਨੇ Id, Ego ਤਥਾ Super ego ਦੀ ਸਪੱਸ਼ਟ ਵਿਆਖਿਆ ਕੀ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਨ ਤੀਨਾਂ ਦੇ ਬੀਚ ਕੋਈ ਸਪੱਸ਼ਟ ਸੀਮਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਨ ਤੀਨਾਂ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਚ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਚ Id ਅਧਿਕ ਵਿਕਸਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਦਕਿ ਕੁਝ ਵਿਅਕਤੀ ਚ ego ਅਧਿਕ ਵਿਕਸਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਕ ਸਾਮਾਨ ਵਿਅਕਤੀ ਚ Id, Ego ਤਥਾ Super ego ਤੀਨਾਂ ਦੀ ਇਕਤਾ ਸਮਾਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਥਾ ਇਕ ਦੂਜੇ ਦੇ ਨਾਲ ਮਿਲਕਰ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹੈ।

③ **ਮਾਨਸਿਕ ਨਿਯਤਿਵਾਦ (Psychic Determinism)** :— Freud ਨੇ ਮਾਨਸਿਕ ਨਿਯਤਿਵਾਦ ਨੂੰ ਮਨੋਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਦਾ ਆਧਾਰਭੂਤ ਦੇ ਰੂਪ ਚ ਸਵੀਕਾਰ

किया है। इनके अनुसार प्रत्येक मानसिक क्रियाओं का एक कारण होता है। मानसिक निश्चयवाद के आधार पर Freud ने स्वप्न, कल्पना, स्मृति दोष, बोलने की भूलें इत्यादि की व्याख्या [illegible] के रूप में प्रस्तुत किया है। इन्होंने यह कहा कि प्रत्येक मानसिक क्रियाओं का कुछ-न-कुछ कारण अवश्य होता है।

(4) मानसिक ऊर्जा तथा मूलप्रवृत्ति का सिद्धान्त (Psychic energy and Theory of instinct) :— Freud ने अपने मनोविश्लेषणवाद में दो प्रकार के ऊर्जा शक्ति का वर्णन किया है - दैहिक ऊर्जा (Physiological energy) तथा मानसिक ऊर्जा (Psychic energy)। दैहिक ऊर्जा की उत्पत्ति भोजन से होती है और इसका उपयोग शारीरिक क्रियाओं जैसे - सांस लेना, रक्त संचार इत्यादि में किया जाता है। मानसिक ऊर्जा की उत्पत्ति उत्तेजन के स्नायुदैहिक अवस्था (neuro-physiological state) से होता है। Freud का ऐसा विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति में मानसिक ऊर्जा की मात्रा सीमित होती है और इसका उपयोग व्यक्ति उन मानसिक क्रियाओं के करने में करता है जो विभिन्न प्रकार की शारीरिक आवश्यकताओं से उत्पन्न शारीरिक उत्तेजना को दूर करने के लिए किया जाता है। इन शारीरिक उत्तेजनाओं या आवश्यकताओं के मनोवैज्ञानिक या मानसिक प्रतिनिधित्व या चित्रण को मूलप्रवृत्ति (instinct) कहा जाता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि किसी दैहिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए जो इच्छा, या मनोवैज्ञानिक कल्पना होती है उसे मूलप्रवृत्ति कहते हैं। जैसे- प्यास की मूलप्रवृत्ति शारीरिक कोशिकाओं में पानी की कमी से उत्पन्न होता है और पानी [illegible] अभिव्यक्त होती है। इसलिए मूल [illegible] आन्तरिक प्रयोजन है जो [illegible]
प्रवृत्ति एक प्रकार का आन्तरिक [illegible]

की उत्पत्ति भी id से आरम्भ होती है परन्तु इसका नियंत्रण Ego द्वारा होता है। 1920 ई० के बाद Freud ने मूल प्रवृत्ति के दो प्रकार बतलाये हैं जिन्हें जीवन मूल प्रवृत्ति (Life instinct or Eros) तथा मृत्यु मूल प्रवृत्ति (death instinct or Thanatos) कहते हैं। जीवन मूल प्रवृत्ति के अन्तर्गत वे सभी इच्छाएँ आती हैं जो प्राणी के महत्वपूर्ण जैविक प्रक्रियाओं का संचालित करते हुए प्रजातियों के प्रजनन को प्रोत्साहित करते हैं। Freud ने जीवन मूल प्रवृत्ति के अन्तर्गत Sex instict को काफी महत्व दिया है। Sex instinct के उर्जा को libido की संज्ञा दी जाती है। Freud ने Sex instinct का प्रयोग काफी विस्तृत अर्थ में किया है। मनुष्य के जीवन में जिन शारीरिक क्रियाओं को करने से आनन्द की अनुभूति होती है वे सभी यौन मूल प्रवृत्ति के अन्तर्गत आते हैं। मृत्यु मूल प्रवृत्ति के अन्तर्गत वे सारी इच्छाएँ सम्मिलित होती हैं जिनसे प्रेरित होकर व्यक्ति सभी प्रकार की Destructive व्यवहार (विध्वंसात्मक कार्य) जैसे - आत्महत्या, दूसरों को जान मारना, आक्रमण करना इत्यादि कार्य करता है। Freud ने death instinct के महत्व को बतलाते हुए कहा कि प्रत्येक जीवित प्राणी के जीवन समाप्ति की दिशा में लौटने की प्रवृत्ति होती है और इसीलिए Freud ने कहा है कि "The goal of all life is death".

व्यक्ति के जीवन में Life intinct तथा death instinct दोनों एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करते हैं तथा व्यक्तित्व के विकास को संचालित करते हैं। ये दोनों मूल प्रवृत्तियाँ एक साथ मिलकर कार्य करती हैं। कभी-कभी एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी हो जाते हैं। जब मृत्यु मूल प्रवृत्ति की प्रबलता बढ़ जाती है तो व्यक्ति

प्रिय वस्तु या व्यक्ति को काफी समय पहले खो देता है। इस तरह Freud ने कामवासना (Libido) की व्याख्या मनोलैंगिक विकास के आधार पर करने का प्रयास किया है।

(5) चिंता एवं प्रतिरक्षा रचनाएँ (Anxiety and defence mechanisms) :— जब व्यक्ति के ego को किसी प्रकार का खतरा महसूस होता है तो उसमें चिंता उत्पन्न होती है। व्यक्ति इस असंतुलित अवस्था से बाहर निकलने का प्रयास करता है और व्यक्ति का ego अपने आपको उससे रक्षा करना चाहता है। इसके लिए वह कुछ विशेष प्रकार के mechanism को अपनाता है जिसे Defence mechanism या ego defence mechanism कहा जाता है। इन mechanisms का प्रयोग करके व्यक्ति अपने ego को Id की प्रवृत्तियों तथा उसका विरोध करते हुए Super ego के निर्देशों से बचा पाता है। Defence mechanism मुख्य रूप से अचेतन स्तर पर कार्य करता है इसलिए इसके बारे में व्यक्ति को जानकारी नहीं रहती है। Defence mechanism व्यक्ति के चिंता की तीव्रता के स्तर को इसलिए कम कर देते हैं क्योंकि वास्तविकता का ज्ञान विकृत हो जाता है। Freud ने अनेकों प्रकार के Defence mechanism का उल्लेख किया है जिनमें दमन (Repression), प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction formation), प्रतिगमन (Regression), प्रक्षेपण (Projection), युक्तिकरण (Rationalization), उदात्तीकरण (Sublimation), विस्थापन (Displacement) Defence mechanism के प्रमुख हैं। दमन एक प्रमुख इच्छाएँ तथा विचारों के द्वारा व्यक्ति की कष्टदायक एवं अप्रिय इच्छाएँ तथा विचार स्वतः अचेतन में चली जाती हैं। ... के बारे में जानने के लिए Freud ने स्वप्नों एवं सम्मोहन का ... के स्वप्न विश्लेषण, स्वतंत्र साहचर्य

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

सहारा लिया है। प्रतिक्रिया निर्माण एक ऐसी मनोरचना है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अपने Ego को किसी अप्रिय इच्छा तथा प्रेरणा से ठीक उस इच्छा या प्रेरणा के विपरीत विकसित कर अभिव्यक्त करता है। जैसे - जिस व्यक्ति शराब पीने की अधिक ललक होती है, वह व्यक्ति अ-शराब का प्रचार करता है। प्रक्षेपण एक ऐसी मनोरचना है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अपने असामाजिक प्रवृत्ति ~~...~~ मनोवृत्ति एवं व्यवहारों को अन्य लोग पर आरोपित कर देता है। इस तरह विभिन्न मनोरचनाओं के सहारे व्यक्ति अपने Ego को चिन्ता से बचाता है।

(6) मनोलैंगिक विकास की अवस्थाएँ (Stages of Psychosexual Development):- Freud ने मनोलैंगिक विकास की अवस्थाओं के सहारे यह स्पष्ट प्रमाण किया है कि शिशु में जन्म के समय से ही कामशक्ति अर्थात Libido उपस्थित रहता है और विभिन्न अवस्थाओं से गुजर कर ऐसी शक्ति विकसित होती है। Freud ने 5 मनोलैंगिक अवस्थाओं का उल्लेख किया है जिन्हें मुखावस्था (Oral Stage), गुदावस्था (Anal Stage), लिंग प्रधान अवस्था (Phalic Stage), अव्यक्तावस्था (Latency Stage) तथा जननेन्द्रियावस्था (Genital Stage) कहते हैं। मनोलैंगिक विकास की इन विभिन्न अवस्थाओं का व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास को निर्धारित करता है और यदि इन अवस्थाओं में किसी प्रकार की विकृति उत्पन्न होती तो व्यक्तित्व विकास में भी विकृति उत्पन्न हो जाती है।

(7) मन-शरीर समस्या (Mind-Body Problem):- Freud ने मन-शरीर समस्या पर कोई विशेष उल्लेख नहीं किया है। मनोवैज्ञानिकों ने इनके सम्प्रदाय को मनोवैज्ञानिक समानान्तरवाद (Psychological Parallelism) कहा है क्योंकि

N REDMI Y3
L CAMERA

मानसिक प्रक्रियाएं दैहिक प्रक्रियाओं की अनुगामी-मात्र ही नहीं होती है और दैहिक प्रक्रियाएं मानसिक प्रक्रियाओं के पहले होती हैं। Lundin (1985) ने Freud को ~~[illegible]~~ मनोदैहिक अन्तःक्रियावाद (Psychophysical interactionism) का समर्थक माना है। इनका आधार यह है कि Id, Ego तथा Superego एवं बाह्य वास्तविकता के साथ सतत अन्तःक्रिया पर जोर दिया है।

इस तरह Freud का मनोविश्लेषणवाद मनोविज्ञान में काफी लोकप्रिय रहा और इसका प्रभाव मनोविज्ञान के कुछ विशेष शाखाओं जैसे - Abnormal Psychology, Clinical Psychology के क्षेत्र में सबसे अधिक रहा है। इन सबके बावजूद भी आलोचकों ने Freud के मनोविश्लेषणवादी सम्प्रदाय की कटु आलोचना की है जो इस प्रकार है —

(1) Freud ने अपने सिद्धांतों एवं सम्प्रत्ययों का विकास रोगियों के व्यक्तिगत अवलोकनों एवं उनके अपने सपनों के विश्लेषण पर आधारित थे। इसके अलावे मानसिक रोगियों द्वारा जो कुछ भी कहा गया उसपर भी इन्होंने पूर्ण विश्वास किया। इन सबसे प्राप्त आंकड़ों का सत्यापन करना मुश्किल है क्योंकि मानसिक विकृत लोगों के मानसिक संघर्षों, स्वप्नों आदि के विश्लेषण के आधार पर सामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों की व्याख्या ठीक नहीं है। इस तरह Freud द्वारा प्राप्त आंकड़ों का प्रयोगात्मक रूप से सत्यापन नहीं किया जा सकता है।

(2) कुछ आलोचकों ने Freud की इस बात पर आलोचना की है कि इन्होंने जरूरत से ज्यादा अचेतन सम्प्रत्ययों [illegible], बच्चों की लिबिडो, ईडीपस ग्रन्थि इत्यादि [illegible] है। आलोचकों का कहना है कि ये सारे सम्प्रत्यय कोई वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित नहीं हैं

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

ਬਲਕਿ ਪੌਰਾਣਿਕ ਕਥਾਵਾਂ ਪਰ ਆਧਾਰਿਤ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਗ਼ਲਤ ਹੈ।

(3) Skinner (1954) ਨੇ Freud ਕੀ ਆਲੋਚਨਾ ਕਰਤੇ ਹੁਏ ਕਹਾ ਕਿ ਇਨ੍ਹੋਂਨੇ ਐਸੇ ਸੰਪ੍ਰਤਯੋਂ ਕਾ ਜੈਸੇ - ਕਾਮਸ਼ਕਤੀ (Libido) ਇਤਿਆਦਿ ਕਾ ਉਪਯੋਗ ਕਿਯਾ ਹੈ ਜਿਸਕਾ ਮਾਪਨ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਹੈ ਔਰ ਜਿਸਕਾ ਮਾਪਨ ਨਹੀਂ ਕਿਯਾ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ ਉਸੇ ਆਧਾਰ ਬਨਾ ਕਿਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਾ ਸਾਮਾਨਯੀਕਰਣ ਕਰਨਾ ਉਚਿਤ ਨਹੀਂ ਹੈ।

(4) ਆਲੋਚਕੋਂ ਨੇ Freud ਕੀ ਆਲੋਚਨਾ ਇਸ ਆਧਾਰ ਪਰ ਕੀ ਹੈ ਕਿ ਇਨ੍ਹੋਂਨੇ ਅਪਨੇ ਮਨੋਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣਾਤਮਕ-ਸਿਧਾਂਤ ਮੇਂ ਜ਼ਰੂਰਤ ਸੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਯੌਨਿਕ ਪ੍ਰਸੰਗੋਂ ਪਰ ਬਲ ਦਿਯਾ ਹੈ ਜੋ ਉਚਿਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਨਕਾ ਯਹ ਕਹਨਾ ਹੈ ਕਿ ਸ਼ਿਸ਼ੁਓਂ ਮੇਂ ਜਨਮ ਸੇ ਹੀ ਯੌਨਿਕ ਇੱਛਾਏਂ ਮੌਜੂਦ ਰਹਤੀ ਹੈਂ, ਸਹੀ ਜਾਨ ਨਹੀਂ ਪੜਤਾ ਹੈ।

ਇਸ ਤਰਹ ਆਲੋਚਕੋਂ ਨੇ Freud ਕੇ ਵਿਚਾਰੋਂ ਕੀ ਕਟੂ ਆਲੋਚਨਾ ਕੀ ਹੈ। ਇਨ ਆਲੋਚਨਾਓਂ ਕੇ ਬਾਵਜੂਦ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਕੇ ਖੇਤਰ ਮੇਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਕਰ ਕੇ ਨੈਦਾਨਿਕ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਤਥਾ ਅਸਾਮਾਨਯ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਮੇਂ ~~ਮਨੋ~~ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਸੇ ਉਨਕੇ ਪ੍ਰਤਿ ਆਭਾਰੀ ਹੈਂ। ਆਜ ਭੀ ਉਨਕੇ ਕਈ ਸੰਪ੍ਰਤਯ ਏਵੰ ਸਿਧਾਂਤ ਆਧੁਨਿਕ ਸਿਧਾਂਤੋਂ ਕੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸ੍ਰੋਤ ਮਾਨੇ ਜਾਤੇ ਹੈਂ।

——— × ——— × ———

ON REDMI Y3